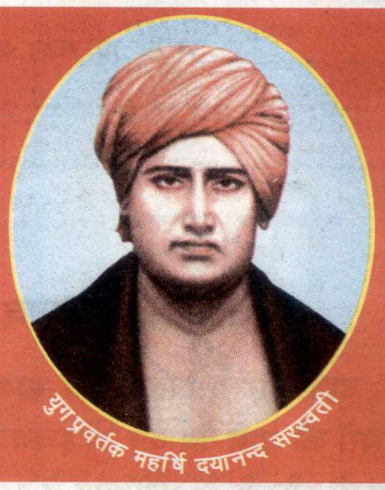
युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 12 अंक 43 कुल पृष्ठ-8 4 से 10 मई, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 वै. शु.-09

हिमालय की उपत्यकाओं में एवं रावी नदी के तट पर स्थित दयानन्द मठ चम्बा के संस्थापक, संचालक एवं सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के अध्यक्ष वीतराग संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी के 80वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 3 से 5 मई, 2017 को भव्य कार्यक्रम सम्पन्न

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी आर्य समाज की महान विभूति थे

– स्वामी आर्यवेश

दयानन्द मठ चम्बा आर्य समाज की तीर्थ स्थली है
– आचार्य रामानन्द

स्वामी सुमेधानन्द जी की प्रेरणा सदैव ऊर्जा प्रदान करती है
– स्वामी सवितानन्द

स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए समर्पित हूँ

वर्ष 2018 में स्वामी सुमेधानन्द जी के जन्मदिवस के अवसर पर विशाल आर्य महासम्मेलन का होगा भव्य आयोजन

– आचार्य महावीर सिंह

हिमालय की उपत्यिकाओं में तथा रावी नदी के तट पर हिमाचल प्रदेश के ऐतिहासिक नगर चम्बा में निर्मित विशाल दयानन्द मठ में 3 से 5 मई, 2017 तक आर्य जगत की महान विभूति सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के अध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल के अध्यक्ष एवं दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष एवं संचालक पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी के 80वें जन्मदिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य जगत् के उद्भट विद्वान आचार्य रामानन्द जी एवं स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा दीक्षित आर्य संन्यासी स्वामी सवितानन्द जी सरस्वती ने तीनों दिन उपस्थित रहकर पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आर्य समाज के इस महत्त्वपूर्ण केन्द्र की भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला।

इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में प्रातः एवं सायं विशेष यज्ञ का अनुष्ठान किया गया जिसके ब्रह्मा पद को स्वामी सवितानन्द सरस्वती जी ने सुशोभित किया। यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सुखपाल के भजनों एवं आचार्य रामानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों का क्रम निरन्तर चलता रहा। आचार्य महावीर जी की धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती जी आर्या के भजन निरन्तर होते रहे। इस कार्यक्रम में चम्बा एवं विभिन्न स्थानों से पधारे हुए आर्यजनों तथा मठ में संचालित वरिष्ठ उच्च विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। पूरे आयोजन की धुरी मठ की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष एवं वर्तमान संचालन वैदिक विद्वान समर्पित व्यक्तित्व के धनी आचार्य महावीर सिंह जी के संयोजन में तथा आचार्य जी के स्व. युवा पुत्र श्री ऋषि कुमार जी की धर्मपत्नी करूणा आर्या एवं उनके पुत्र चि. ध्रुव कुमार ने यजमान के रूप में यज्ञ में विशेष भूमिका निभाई।

इस अवसर पर आचार्य रामानन्द जी ने स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके अनेक संस्मरणों को प्रस्तुत कर उपस्थित श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया। उन्होंने बताया कि स्वामी सुमेधानन्द जी एक ऐसे संन्यासी थे जिन्होंने भरी जवानी में जीवन के समस्त ऐश्वर्यों को ठुकराकर त्याग और संघर्ष का रास्ता अपनाया तथा युवावस्था में वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी से संन्यास की दीक्षा लेकर जीवन के आखिरी श्वांस तक वेद, महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के प्रति समर्पित रहे। स्वामी जी ने अपना जीवन यज्ञमय बनाकर बड़े–बड़े यज्ञों का अनुष्ठान किया और हजारों लोगों को यज्ञ करने की प्रेरणा प्रदान की। हिमाचल प्रदेश के चम्बा नगर में जिस समय स्वामी सुमेधानन्द जी पहली बार आये थे तो उन्हें रावी नदी का किनारा अत्यन्त भा गया और उसी समय उन्होंने यहाँ पर एक विशाल केन्द्र स्थापित करने का संकल्प लेकर कार्य करना प्रारम्भ किया। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के कर–कमलों से स्थापित दयानन्द मठ चम्बा का वर्तमान विशाल स्वरूप स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के विशाल व्यक्तित्व एवं विशाल हृदय का परिचय दे रहा है। उन्होंने कहा कि आज स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के जन्मदिवस के अवसर पर हम सभी को यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों को करने का संकल्प लेना चाहिए। आचार्य रामानन्द जी ने महाभारत का दृष्टान्त देकर बताया कि युधिष्ठिर द्वारा भीष्म पितामह से जब यह पूछा गया कि स्वर्ग का आनन्द किसे मिलता है अर्थात् स्वर्ग किसको प्राप्त हो सकता है तो भीष्म पितामह ने कहा था कि दान का सदुपयोग करने वाले, सत्य का आचरण करने वाले और तप करने वाले तपस्वी को स्वर्ग का आनन्द मिलता है। आचार्य जी ने शतपथ ब्राह्मण में यास्क द्वारा कहे गये उस वाक्य को भी प्रस्तुत किया जिसमें यास्क ऋषि ने यह पूछने पर कि स्वर्ग में जाने के लिए कैसा कर्म करें तब यास्क ने कहा कि स्वर्ग कामो यजेत अर्थात् स्वर्ग की कामना वालों को यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत करते हुए आचार्य रामानन्द जी ने स्वामी सुमेधानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

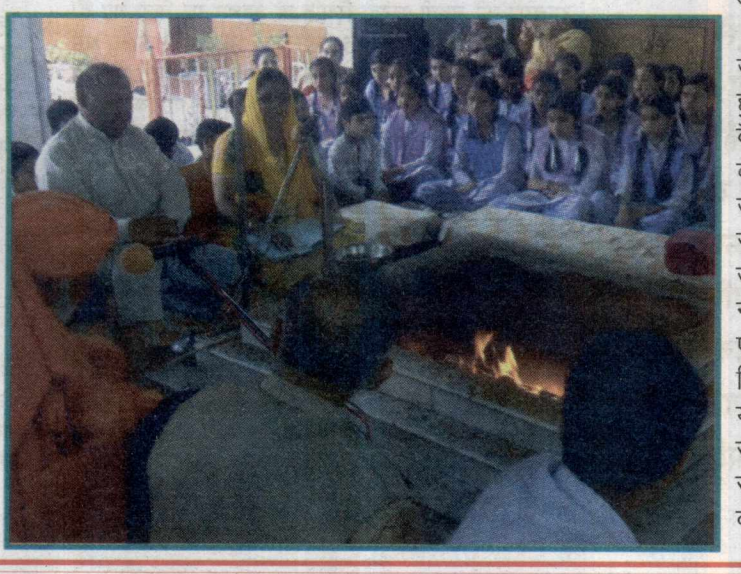

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि जबसे उनका स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज से सम्पर्क हुआ तबसे हम दोनों में अत्यन्त आत्मीय सम्बन्ध रहा। वैदिक विरक्त मण्डल में अति निकट रहकर कार्य करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ और उनके व्यक्तित्व को जानने तथा पहचानने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का अद्भुत व्यक्तित्व था, उनके हृदय की विशालता, उदारता किसी पैमाने से नहीं नापी जा सकती। उनके संकल्प और योजनाएँ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की होती थीं। स्वामी जी ने बताया कि स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने मुझे कहा था कि यदि उनका सम्पर्क प्रारम्भ में ही स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ हो जाता तो भारत में आर्य राष्ट्र की स्थापना का संकल्प भी जरूर पूरा हो जाता। स्वामी सुमेधानन्द जी कहते थे कि उन्हें आर्य समाज के कुछ

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

दान

– ब्रजेन्द्र श्रीवास्तव

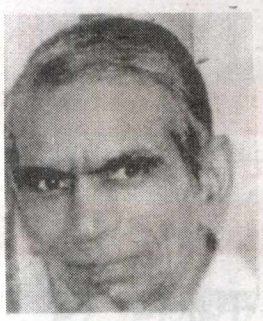

वह इकतारा गुंजाता और गाता हुआ घर के सामने से निकल रहा था, गायन वादन में लय और ताल के साथ स्वर में अक्खड़पना होते हुए भी कर्णप्रियता थी। इसलिए बगीचे में काम करते-करते रुक गया। ध्यान देकर सुना :

सबद निरन्तर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी,

उठत-बैठत कबहुँ न छूटै ऐसी तारी लागी।

सोचा यह कबीर की साखी लगती है। आगे उसने गाया - कहै कबीर यह उनमुनि रहनी.... तो सहसा निर्गुण कबीर को साकार करने वाले कुमार गन्धर्व याद आ गए। वाह! इसे कुछ दिया जाए - बीस रुपये, घर के भीतर गया सोचा बीस बहुत हैं दस ठीक हैं, कहीं रोज-रोज आ खड़ा हुआ तो?और जब उसके दान पात्र में डाला तो वह था पाँच रुपये का सिक्का। ऐसा क्यों हुआ कि बीस रुपये का विचार पाँच रुपये में पूरा हुआ?पर ऐसा अक्सर ही होता है। मैं शर्त तो नहीं लगाता पर बहुत संभव है, आपके साथ भी ऐसा होता होगा कि किसी याचक को देखकर जितनी वस्तु, अन्न या पैसा आप देने का विचार एकदम से करते हैं उसमें दान देते-देते कमी आ ही जाती है। दान में बढ़ोतरी कम ही होती है।

दान की तात्कालिक मनोवृत्ति पर कर्ण का एक प्रसंग है जो हमारी दानघटाऊ मनोवृत्ति की पुष्टि करता है। एक सुबह कर्ण स्नानपूर्व तेल मर्दन कर रहे थे, बाएँ हाथ में वह स्वर्ण का रत्नजटित तेल पात्र लिए थे और उसमें से तेल लेकर दाएं हाथ से शरीर में लगा रहे थे। इतने में एक याचक उपस्थित हुआ, कर्ण के समक्ष उस समय कोषाध्यक्ष उपस्थित नहीं था इसलिए कर्ण ने उस याचक को तत्काल तेल से भरा वह स्वर्णपात्र बाएं हाथ से ही भेंट कर दिया। इस पर याचक ने सविनय यह प्रश्न किया कि - 'हे दानवीर अंगराज! आप धर्म और सदाचार के ज्ञाता हैं फिर भी आपने बाएं हाथ से दान कैसे दे दिया?क्योंकि नीति यह कहती है कि समस्त धर्म-कार्य दक्षिण हाथ से ही सम्पन्न करने चाहिए।' इस पर कर्ण ने कहा - 'हे द्विज श्रेष्ठ! बाएँ हाथ में स्वर्णपात्र को दाएं हाथ से लेने में कुछ समय तो लगता ही, इसी अल्प समय में ही मेरे मन में यह विचार आ सकता था कि रत्नजटित यह स्वर्णपात्र तो बहुमूल्य है, कुछ स्वर्ण मुद्राएं ही पर्याप्त रहेंगी। दान की सात्विक वृत्ति चित्त में बहुत ही अल्प समय के लिए ठहर पाती है इसलिए मैंने चित्त में सद्वृत्ति के रहते तत्काल दान करना उचित समझा और बाएं हाथ से ही दान दे दिया है।'

ऐसा क्यों होता है कि अच्छे विचार, दान और परोपकार की भावना, वैर-द्वेष भुलाकर मित्रता का इरादा, दूसरों को क्षमा कर देने की इच्छा एक तरंग की तरह आती है तो दुबारा कम ही लौटती है। मनीषियों ने इसका एक कारण यह माना है कि मन की गति और जल की गति ऊँचे से नीचे की तरफ जाने की होती है। सांख्य दर्शन में जल की प्रकृति सत्त्व और तम इन दो गुणों का मिश्रण मानी गई है। सत्व गुण उर्ध्वगामी है जबकि तमोगुण अधोगामी। यही कारण है कि हमारा मन थोड़ी देर के लिए ऊँचे परोपकारी विचारों पर जाता तो है पर वहाँ की ऊँचाई से तुरन्त हटकर अपने स्वार्थ के निचले स्तर की तरफ चलने लगता है। ग्रीक दार्शनिकों ने वायु और अग्नि को ऊपर की ओर बढ़ने वाला उर्ध्वमुखी और जल व पृथ्वी को नीचे की तरफ बढ़ने वाला माना है। सुश्रुत ने आयुर्वेद में भी जल को सत्व और तम का मिश्रण माना है इसलिए मनुष्य का मन:शरीर रचना की दृष्टि से मन की वृत्ति या तौर-तरीका अच्छे विचारों से हटकर निकृष्ट विचारों की तरफ सहज ही जाने का रहता है, आधुनिक मनोविज्ञान इस मानसिक प्रवृत्ति को इतने स्पष्ट रूप से अभी डिफाइन नहीं कर पाया है।

प्रयत्न तो मन को ऊँचा उठाने के लिए सद्वृत्तियों की ओर ले जाने के लिए ओर वहीं बनाए रखने के लिए हमको करना होगा?वही जो हम जल को निचले स्तर से ऊपर के स्तर तक पहुँचाने के लिए करते हैं - हम बिजली की, पानी को ऊपर फेंकने वाली, मोटर अर्थात् बूस्टर पम्प लगाते हैं। अपने मन की वृत्तियों को ऊपर उठाने और उन्हें सतत उर्ध्वगामी बनाए रखने के लिए हमें अपनी इच्छाशक्ति को संकल्प से उसी तरह जोड़ना होगा जैसे हम विद्युत शक्ति को जल के पम्प से जोड़ते हैं- हमें अपना मन शुभ संकल्पमय बनाना होगा। यजुर्वेद में जो बार-बार प्रार्थना की गई है - 'मेरा मन शुभ संकल्पवान बने - तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु', वह इसीलिए तो की गई है।

दान में कौन कितना आगे?दान पर आज विश्वव्यापी सर्वेक्षण हो रहे हैं कि कौन सा देश कितना धन या समय परोपकार में देता आ रहा है। इसमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से लेकर आम नागरिक, सभी शामिल किए गए हैं। इस सर्वे के अनुसार अमेरिकी कम्पनियाँ और नागरिक दोनों ही, धन व समय परोपकार में लगाने में सबसे आगे हैं। जबकि भारत धर्म आध्यात्म प्रधान होने के दावे के बावजूद दानधर्म के कार्य में बहुत पीछे हैं। वास्तविकता भी यही है कि भारत में दान पर बहुत जोर धर्मग्रन्थों में तो दिया गया है पर व्यवहार में दान परोपकार एक औपचारिकता मात्र दिखाई देता है। भारत में दान परोपकार की भावना में गिरावट आने का एक बड़ा कारण है यहाँ के धर्म-ध्वज वाहकों का अर्थात् मठ, मंदिर, पुरोहित वर्ग का व्यवहार आचरण एकतरफा होता है। ये सब दान तो खूब लेते हैं, पर दान को समाज को लौटाने में कोई अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते नहीं दिखाई देते। भारत के सर्वाधिक धन सम्पन्न उत्तर व दक्षिण के मंदिरों व मठों का, पीठाधीश्वरों का दान, परोपकार प्राकृतिक आपदा सहायता संबंधी व्यवहार किसी तरह प्रेरक मार्गदर्शक नहीं है। कुछ स्कूल, अस्पताल, धर्मशालाएं अन्न क्षेत्र या लंगर चलाना पर्याप्त नहीं है। इलेक्ट्रॉनिक चैनलों पर दर्शकों की यह जिज्ञासा कि जून 2013 में केदारनाथ उत्तराखण्ड के खण्ड प्रलय में अटूट धन सम्पन्न ऐसे कितने धर्म संस्थानों ने मदद

की?आप यह नहीं कह सकते कि जिनका आधार ही दूसरों के दान पर टिका है वे दान क्यों करें?क्योंकि अपार सम्पत्ति जमा होने के कारण ही ऐसे धर्म संस्थानों में उत्तराधिकार या अधिकार को लेकर मुकदमे चलते हैं। आम जनता बड़े लोगों के आचरण के अनुसार ही व्यवहार करती है - 'महाजनो येन गता स: पन्था' जिस मार्ग पर महाजन बड़े लोग चलें वही मार्ग सभी को अनुकरणीय होता है। गिरधर कविराय ने इसलिए यह सलाह धनिक वर्ग को दी है कि जब घर में पैसा बढ़ जाए तो दोनों हाथों से दान देना चाहिए नहीं तो यह पैसा ले डूबता है। गिरधर कवि राय ने कहा है कि जैसे नाव में पानी भर जाने पर उसमें बैठे लोग पानी को दोनों हाथों से बाहर उलीचते हैं, ताकि नाव डूबे नहीं। उसी तरह धन को दान के माध्यम से बाहर निकालते रहने पर ही अधिक धन से होने वाले दुर्गुणों से बचा जा सकता है।

वर्तमान में दान ही प्रधान धर्म या सामाजिक आचार है। काल के चार विभाजन सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग धर्म आचरण की बढ़ती-घटती स्थिति के आधार पर किए गए हैं। धर्म शब्द से भले ही सेक्यूलरवादी कुछ भी अर्थ निकालें, धर्म का व्यापक अर्थ सामाजिक आचरण ही है। महाभारत में भीम युधिष्ठिर से कहते हैं कि सभी शास्त्रों में आचार को प्रथम स्थान दिया गया है। इस आचार से ही धर्म बनता है। 'सर्व आगमानाम आचार: प्रथमं परिकल्पते, आचार प्रभवो धर्मो।' इस धर्म आचरण के चार चरण हैं सत्य, यज्ञ, तप और दान। मतान्तर से यह सत्य ज्ञान यज्ञ और दान है। सतयुग में सत्य, त्रेता में यज्ञ और द्वापर में तप और वर्तमान कलयुग में दान की प्रधानता मानी गई है। इसीलिए सन्त प्रवर तुलसी कहते हैं :-

प्रगट चारिपद धर्म के कलिमह एक प्रधान।

येन केन विधि दीने, दान करे कल्याण।।

दान की सीमा क्या हो? भागवत कथामर्मज्ञ डोंगरे महाराज ने आय का पाचवाँ भाग दान करने पर जोर दिया है, यह विभाजन उदार और धनी वर्ग के लिए ठीक लगता है। जबकि मनु ने आमदनी का दशमांश दान करने को कहा है। अर्थात् सौ रुपये आय पर 10 रुपये। इस्लाम में पूरे साल की आमदनी का एक प्रतिशत जकात अर्थात् दान-पुण्य पर खर्च करने का विधान किया गया है जिसे सभी आसानी से कर सकते हैं। ईसाइयों में भी चैरिटी पर अर्थात् दान पर बहुत जोर दिया गया है। सर्वस्वदान नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आजीविका नष्ट होने से दूसरों के आश्रित रहना पड़ता है, इसलिए शास्त्रों में इसे मना किया गया है। क्या निर्धन दान करें?निर्धन को दान नहीं करना चाहिए। इसके अलावा जो व्यक्ति अपनी पत्नी, बच्चे और वृद्धजनों का पालन नहीं करते हुए दान करते हैं उन्हें पुण्य के स्थान पर पाप ही मिलता है। व्यवहार में आप समाज में ऐसे बहुत से दानदाता देख सकते हैं जो अपने बीमार माता-पिता को भोजन पानी और दवा देने में झगड़ा करते हैं कि अब तुम्हारा नम्बर है दवा पानी देने का मैं कितना करूँ?फिर अपने स्वयं के बच्चों के लिए मंदिरों में दान करते हैं। इस मनोवृत्ति पर शास्त्र का कथन है कि जो व्यक्ति समर्थ होकर भी अपने स्वजनों को तो दुखी जीवन देता है, उनका पालन पोषण नहीं करता परन्तु परजनदाता बनता है दूसरों को दान देता है ऐसा दान मधु-मिश्रित विष समान अधर्म है।

क्या दान का मुहूर्त देखना चाहिए? मुहूर्त का अर्थ यदि दान लेने वालों व देने वाले को सर्वाधिक लाभ पहुंचाना है तो आपत्ति के समय धन, अन्न, जल, वस्त्र, औषधि, आश्रय आदि की तत्काल सहायता देना श्रेष्ठ है। ऐसे में पंचांग का मुहूर्त कोई नहीं देखना चाहेगा। जैसे सर्जरी इमरजेन्सी में तत्काल भी की जाती है और योजना बनाकर भी की जाती है वैसे ही दान के सम्बन्ध में समझना चाहिए। आपात् समय तत्काल दान के साथ-साथ योजना बनाकर तीर्थ, व्रत, पर्व पर दान करना एक तरह से मुहूर्त या प्रसंगवश दान करना ही है।

दान पर पलने की आलसी प्रवृत्ति गांवों में संयुक्त परिवार के दौर में घर के ऐसे संबंधी को जो घर का, बाहर का कुछ भी काम काज नहीं करते, अक्सर, मलूका सा घर में पड़े रहने वाला कहा जाता रहा है। यह मलूका कौन थे?यह थे सन्त मलूकदास जो यह मानते थे कि जो व्यक्ति पूरी तरह ईश्वर पर निर्भर हो जाता है उसकी देखभाल स्वयं राम करते हैं। सन्त मलूकदास कहते हैं।

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।

दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।

सन्त मलूक ने जब ऐसा कहा होगा तब उनका भाव शरणागति का था पर आलसी लोगों ने दूसरों की उदारता व दान धर्म का लाभ लेने के लिए इसे अपना जीवनमंत्र बना लिया, तो क्या किया जाए। वैसे यह सभी जानते हैं कि कीट पतंग भले ही तनख्वाह वाली चाकीर नहीं करते पर दिनभर भोजन खोजने का श्रम तो करते ही हैं तभी दाता राम उन्हें भोजन देते हैं। दूसरों के दान से पेट भरने की और खुद कुछ न करने की जड़ता देखकर आम आदमी का दान देने को मन ही नहीं करता इसलिए पात्र को ही दान करने का आग्रह किया जाता है।

दान सामाजिक क्षमता बढ़ाने में सहायक - धनी और निर्धन वर्ग के बीच विषमता की खाई या दूरी सदैव से रहती आई है। धनी वर्ग टैक्स के माध्यम से अपना धन गरीब को देने का विरोध करेगा पर यदि उसे पुण्य होने का आश्वासन दिया जाए तो वह दान करने को तैयार हो जाता है। पुण्य एक तरह का बैंक एकाउण्ट है जिसमें दान जमा हो जाता है और 'तुम एक पैसा दोगे वह दस लाख देगा' की तर्ज पर काम करता है। धर्मशास्त्र वस्तुत: सामाजिक आचार व्यवहार में समता व न्याय के उद्देश्य से ही बने हैं इसलिए दान की महिमा बताकर सामाजिक विषमता को कम करने का प्रयास इसमें रहता है। इसलिए दान को अहंकार रहित होकर करने पर भी जोर है।

ऐसी देनी देन ज्यूं, कित सीखे हो सैन,

ज्यों ज्यों कर ऊँच्यो करो, त्यों-त्यों निचे नैन।

देनेहारा कोई और है, भेजत सो दिन रैन,

लोग भरम हम पर करें, तासो नीचे नैन।।

जैसा कि हर व्यवस्था की मूल भावना के साथ होता है, कालान्तर में इस भावना की उपेक्षा होने लगती है। हम देखते है कि फल बांटने के चित्र अखबारों में छपते हैं जो दान लेने वाले के स्वाभिमान को ठेस पहुंचाते हैं और दानदाता के अहं को बढ़ाते हैं तो आइये! हम भी विनम्रता से दान करने को अपनी आदत बनाएं।

- 269 जीवाजी नगर, ठाठीपुर ग्वालियर-474011

सत्यार्थ सौरभ से साभार

ऐसा क्यों होता है कि अच्छे विचार, दान और परोपकार की भावना, वैर-द्वेष भुलाकर मित्रता का इरादा, दूसरों को क्षमा कर देने की इच्छा एक तरंग की तरह आती है तो दुबारा कम ही लौटती है। मनीषियों ने इसका एक कारण यह माना है कि मन की गति और जल की गति ऊँचे से नीचे की तरफ जाने की होती है। सांख्य दर्शन में जल की प्रकृति सत्त्व और तम इन दो गुणों का मिश्रण मानी गई है। सत्व गुण उर्ध्वगामी है जबकि तमोगुण अधोगामी। यही कारण है कि हमारा मन थोड़ी देर के लिए ऊँचे परोपकारी विचारों पर जाता तो है पर वहाँ की ऊँचाई से तुरन्त हटकर अपने स्वार्थ के निचले स्तर की तरफ चलने लगता है।

जो व्यक्ति अपनी पत्नी, बच्चे और वृद्धजनों का पालन नहीं करते हुए दान करते हैं उन्हें पुण्य के स्थान पर पाप ही मिलता है। व्यवहार में आप समाज में ऐसे बहुत से दानदाता देख सकते हैं जो अपने बीमार माता-पिता को भोजन पानी और दवा देने में झगड़ा करते हैं कि अब तुम्हारा नम्बर है दवा पानी देने का मैं कितना करूँ?फिर अपने स्वयं के बच्चों के लिए मंदिरों में दान करते हैं। इस मनोवृत्ति पर शास्त्र का कथन है कि जो व्यक्ति समर्थ होकर भी अपने स्वजनों को तो दुखी जीवन देता है, उनका पालन पोषण नहीं करता परन्तु परजनदाता बनता है दूसरों को दान देता है ऐसा दान मधु-मिश्रित विष समान अधर्म है।

नारी उत्पीड़न एवं आर्य समाज

– आजाद सिंह बांगड़

विश्वभर में 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है जो मानव जीवन में महिलाओं के अस्तित्व, वर्चस्व और गरिमा को रेखांकित ही नहीं करता बल्कि स्वीकारता भी है लेकिन जिस प्रकार महिला दिवस को मनाया जाता है उसे रस्म अदायगी या औपचारिकता की खानापूर्ति से अधिक कुछ भी नहीं माना जा सकता। महिला दिवस पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाएँ महिलाओं के बारे में बहुत सारी सामग्री प्रस्तुत करती हैं। जिसमें दर्शाया जाता है कि अमुक महिला ने ये पद या स्थान स्थिति प्राप्त की है। पीठ थपथपाने, प्रशंसा करने में इतने लग्नशील हो जाते हैं कि इन करोड़ों महिलाओं के बारे में भूल जाते हैं जो आज भी धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों और आर्थिक मजबूरियों का शिकार होकर अपनी गरिमा को सरेआम लुटता देख कर खून के आंसु पी लेती हैं और किसी को खबर तक नहीं लगती। कुछ शीर्ष महिलाओं को अपवाद मानकर यदि समूचे महिला समाज पर दृष्टिपात करें तो परिणाम नकारात्मक ही सामने आयेगा, इस स्थिति में ये सारे दावे झूठे हो जाते हैं। जिसमें कहा जाता है कि महिलाओं को भी वो ही समानता, न्याय, स्वतन्त्रता प्राप्त है जो पुरुषों को प्राप्त है। इन दावों का विश्लेषण करके यदि महिला दिवस मनाया जाये तो सार्थक रहेगा।

यहां पर हमें समानता, न्याय और स्वतंत्रता के आधार पर ही चर्चा करनी चाहिए। यदि नारी को वास्तव में समानता का दर्जा प्राप्त है तो प्रश्न उठता है कि हर वर्ष लाखों कन्या भ्रूण हत्यायें इस देश में क्यों हो रही हैं? इस्लाम ने एक पुरुष को चार औरतें रखने की छूट क्यों दे रखी है? ईसाईयत आज भी नारी को बिना रूह व आत्मा का प्राणी क्यों मानते हैं?

शरियत में आज भी महिला की आधी गवाही क्यों माना जाता है? मंदिर, मजिस्द, गिरजाघर, मठों में पुजारी, इमाम, पादरी, महंत के पद पर पुरुषों का वर्चस्व सदियों से क्यों चला आ रहा है? बुरके व परदे महिलायें क्यों पहनती हैं? सती प्रथा का अत्याचार पुरुषों पर क्यों नहीं? पुरुष पर पुनर्विवाह का प्रतिबन्ध क्यों नहीं? आधी आबादी का भाग होते हुए भी महिला पंचायत, विधानसभा, संसद में आधा भाग क्यों नहीं? सरकारी सेवाओं में भी आधा भाग क्यों नहीं? नारी को वेदमंत्रों के पठन–पाठन का अधिकार क्यों नहीं? नारी को नरक का द्वारा क्यों माना जाता है? उसे ताड़ना का ही पात्र क्यों माना गया? नारी को मर्द की खेती क्यों कहा गया? देवदासी प्रथा, दहेज प्रथा, कन्या बाल विवाह, बलात्कार, यौन उत्पीड़न, तलाक पुरुष निरंकुशता, सम्पत्ति में भागीदारी न होना ये सब महिलाओं के खाते में क्यों है? जिस समाज में नारी पुरुष पर आश्रित हो और उसकी पहचान पुरुष गोत्र से हो तो उस समाज में समानता का अर्थ कितना रह जाता है?

कानून की दृष्टि में नर–नारी समान हैं लेकिन न्यायाधीश और अदालत को विधि संहिताओं के अन्तर्गत ही फैसला लेना होता है और विधि संहिताओं के निर्माता पुरुष रहे हैं महिलाएं नहीं। इसलिए विधि संहिताएं महिलाओं के बारे में पूरी तरह खुद प्राकृतिक न्याय पर आधारित नहीं है। पाकिस्तान में महिला कैदियों में से 80 प्रतिशत महिलाएं ऐसी हैं जो अपने ऊपर हुए बलातकार को सिद्ध न कर पाने के कारण जेल में बंद है। क्योंकि वहां के कानून में ऐसी ही व्यवस्था है। स्वाधीन भारत में भी महिलाओं को न्याय व सुरक्षा दिलाने के लिए 25–30 बार नये कानून व अधिनियम बनाने पड़े जिससे मालूम होता है कि कानून व्यवस्था में कुछ कमी थी।

अर्थ शास्त्री अमर्त्य सेन की पुस्तक आर्गुमेंटेटिव इंडियन के आधार पर उत्तरजीविता की समानता, घरेलू लाभ या कार्बो में असमान हिस्सा, घरेलू हिंसा या अत्याचार के भेद मानते हुए नारी पर उत्पीड़न हो रहा है। इन्हें आधार मानते हुए आकलन किया जाता है कि कानून को साक्षी आधारित होने की परिस्थिति की बजाय अन्य सम्भावना पर आधारित बनाना होगा। न्यूनताएं और अक्षमताओं के कारण न्यायी प्रणाली द्वारा पूर्ण न्याय नहीं मिल पाता। जब पुलिस, गवाह, वकील और अदालत तक की आंखे धन से चौंधिया जाती हैं तो कानून को वे अपने सुराख बंद करने होंगे, जिनमें से अपराधी बच कर निकल भागता है। ऐसी स्थिति आने पर महिला को न्याय मिल सकता है।

परम्परावादी या रूढ़िवादी समाजों में आज भी नारी दूसरे दर्जे की हैसियत प्राप्त है। युगल प्रेमियों के मामले में पंचायते खापें जो आज निर्णय ले रही हैं उससे यह बात निकल कर आ रही है कि लड़कियों को आजादी देने से पथ भ्रष्ट होने की सम्भावना बलवती होती है। टी.वी., अश्लील पुस्तकें जो वातावरण तैयार कर रही हैं उससे सामाजिक मर्यादा, पारिवारिक यश और चारित्रिक गरिमा पर आघात करने वाली कोई भी घटना इस परम्परागत समाज में घट जाती है तो एक तूफान खड़ा हो जाता है और औरतों के लिए स्वतंत्रता का दायरा सीमित हो जाता है। विशेषकर यदि ऐसी घटना में दोनों एक ही जाति के ना होकर अलग–अलग जाति या सम्प्रदाय के हो तो तब स्थिति और अधिक बिगड़ जाती है।

गांव में आज भी यही परम्परा है कि गोत्र या गांव की लड़की पूरे गांव की बेटी मानी जाती है। इस तथ्य को शहर या दफ्तर में बैठने वाले अधिकतर लोग नहीं समझ सकते, न पचा सकते हैं। इनकी दृष्टि में बालिग लड़का या लड़की किसी भी जाति, धर्म से सम्बन्धित हो कानून के अनुसार एक दूसरे के साथ विवाह कर सकते हैं। माता–पिता की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है। वे पूरी तरह स्वतन्त्र है, दूसरे पक्ष का कहना है कि यह कानून न तो हमारी सलाह से बनाया गया और ना ही हमारी परम्पराओं व परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाया गया था। इसलिए हम मानने को बाध्य नहीं हैं। ऐसे मामलों में युगल को आजीवन अपने गांव, माता–पिता से अलग रहना पड़ता है। कई बार अपने जीवन से भी हाथ थोना पड़ता है। आर्य समाज अन्तरजातीय विवाह का समर्थन करता है मगर आर्य समाज भी पूर्ण रूप से इसे नहीं अपना पाया। भारतीय समाज विभिन्न जातियों, सम्प्रदायों, संस्कृतियों का देश है लेकिन साझे प्रयासों और साझी सोच से जब समग्र समाज के कल्याण की बात चलेगी तो देर–सवेर ऐसा समाधान अवश्य निकल जायेगा जो अधिकांश को मान्य होगा। यदि नई सम्भावनाओं और नई परिस्थितियाँ पैदा की जाये तो ऐसे समाधानों का क्रियान्वयन सहज एवं सरल होगा।

आर्य समाज उस समृद्ध संस्कृति का समर्थक है जिसमें भारतीय नारी की समानता, न्याय, स्वतंत्रता के अधिकार प्राप्त थे। जिसे आधुनिक नारी प्राप्त करना चाहती है। यह तभी सम्भव है जब समाज में वेदों की आचार संहिता का भी पालन होगा। जिस वातावरण में ये अधिकार उपयोगी होंगे, वह वातावरण तैयार नहीं हो रहा। नारी की शिक्षा, संस्कार, चरित्र और रोजगार की जब तक समुचित गारण्टी नहीं मिलती तब तक इन अधिकारों की संदिग्धता और दुरुपयोग की सम्भावना बनी रहेगी।

– राष्ट्रीय मंत्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, प्राचार्य दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय

आर्य समाज चिड़ावा जिला झुंझुनू राजस्थान में 30 अप्रैल, 2017 को विशेष कार्यकर्ता संगोष्ठी के आयोजन के अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का विशेष उद्‌बोधन

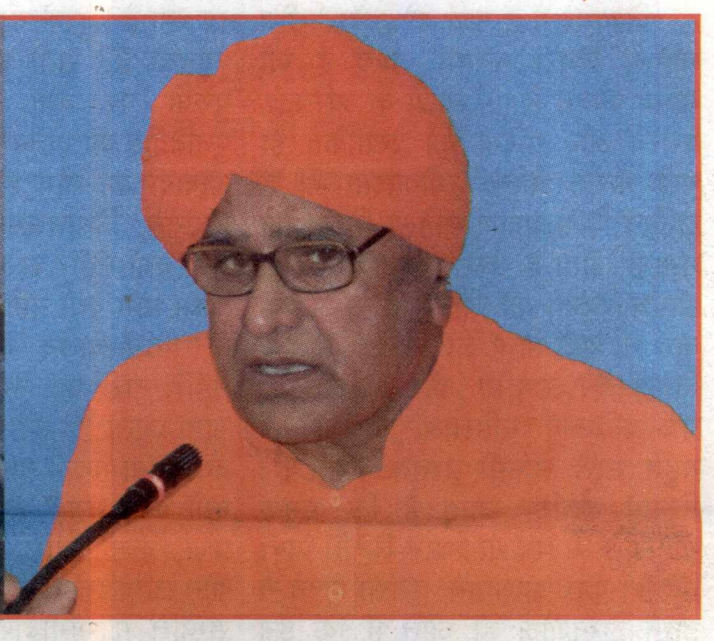

30 अप्रैल, 2017 को आर्य समाज चिड़ावा, जिला–झुंझुनू राजस्थान की ओर से प्रमुख कार्यकर्ताओं तथा प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों की संगोष्ठी का आयोजन सामुदायिक भवन चौधरी कालोनी चिड़ावा में किया गया। आर्य समाज चिड़ावा के युवा प्रधान श्री रणवीर सिंह थालौर की अध्यक्षता एवं वरिष्ठ अधिवक्ता श्री धर्मपाल सिंह के संयोजन में आयोजित उक्त संगोष्ठी में अनुभवी वयोवृद्ध आर्यनेता श्री जयनारायण आर्य, श्री धर्मव्रत शास्त्री प्रधान आर्य समाज झुंझुनू, श्री सुधाकर शर्मा वरिष्ठ उपप्रधान झुंझुनू, श्री लीलाधर शर्मा एडवोकेट खेतड़ी, प्रो. लीलाराम यादव, महाशय मूलचन्द आर्य गिलोद, श्री तुलसीराम आर्य, श्री रामकुमार सिंह, श्री ओम प्रकाश आर्य आदि महानुभावों ने अपने सुझाव एवं विचार प्रस्तुत किये। श्री धर्मपाल सिंह एडवोकेट ने संगोष्ठी की पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए स्वामी आर्यवेश जी का परिचय उपस्थित कार्यकर्ताओं से कराया। उन्होंने बताया कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान उनका परिचय युवाओं के प्रेरणास्रोत तथा आर्य समाज की महान विभूति स्वामी इन्द्रवेश जी तथा क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी से हुआ और उसी श्रृंखला में स्वामी आर्यवेश जी से जिनका उस वक्त श्री जगवीर सिंह नाम था सम्पर्क हुआ। तब से लेकर अब तक हम लोग निरन्तर मिलकर कार्य करते आ रहे हैं और स्वामी आर्यवेश जी के पिछले 45 वर्ष के कार्यों एवं उनके जीवन से अत्यन्त प्रभावित हैं। श्री धर्मपाल जी ने चिड़ावा में आयोजित संगोष्ठी के माध्यम से क्षेत्र में आर्य समाज के कार्यों को तीव्र गति से चलाने का संकल्प प्रस्तुत करते हुए स्वामी आर्यवेश जी से निवेदन किया कि वे इस सम्बन्ध में सभी कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करते हुए भावी कार्यक्रम से अवगत करायें।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने लगभग डेढ़ घण्टे के अपने प्रभावशाली भाषण में आर्य समाज के इतिहास, आर्य समाज के छठे नियम, सप्तक्रांति के मुद्दे, उपयोगी आर्य समाज की परिभाषा तथा लोकशक्ति का निर्माण आदि विषयों पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी आर्य समाज ने आम जनता की समस्याओं को अपने काम का मुख्य हिस्सा बनाया उसके लिए प्रान्तीय अथवा राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू किये और बिना किसी पूर्वाग्रह के आम आदमी की समस्याओं के समाधान के लिए सर्वात्मना समर्पित होकर कार्य किया तब तक आर्य समाज एक तेजस्वी संगठन के रूप में जनता के समक्ष उभरकर आया। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के प्रारम्भिक काल में महर्षि दयानन्द तथा उनके अनुयायी नेताओं ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अवैदिक मान्यताओं के विरुद्ध तथा अंग्रेजों की गुलामी के विरुद्ध प्रचण्ड आन्दोलन छेड़ा तथा स्थान–स्थान पर शास्त्रार्थों के माध्यम से वेद विरुद्ध मान्यताओं को चुनौती दी। बाल–विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा, श्राद्ध तर्पण आदि कुरीतियों के विरुद्ध तथा स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, नर–नारी समता एवं पंचमहायज्ञ आदि वैदिक मान्यताओं को प्रसारित करने का अभियान चलाया और अंग्रेजों को भारत छोड़ने की चेतावनी दी तो सुदूर अमेरिका में बैठे एक विद्वान् एन्ड्रूजैक्सन ने घोषणा की थी कि मुझे एक आग दिखाई देती है जो भारत में धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक कुरीतियों और अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध प्रज्ज्वलित होकर एशिया एवं यूरोप को पार करती हुई अमेरिका की तरफ बढ़ रही है और पूरे विश्व में प्रचलित अवैदिक मान्यताओं के विरुद्ध चुनौती बन रही है उस आग का नाम है आर्य समाज। ऐसे आर्य समाज और उसके सम्बन्ध में एक विदेशी विद्वान की ऐसी घोषणा आज हम सबको यह सोचने के लिए मजबूर करती है कि हम उस आर्य समाज के आग्नेय स्वरूप को फिर से देश और समाज के समक्ष कैसे प्रस्तुत करें। इसके लिए आवश्यक है कि वर्तमान परिस्थितियों का आंकलन करके हमें आर्य समाज का भावी क्रांतिकारी कार्यक्रम तैयार करना चाहिए और जन–सामान्य की समस्याओं के समाधान के लिए आगे आना चाहिए अर्थात् राष्ट्रव्यापी आन्दोलन उन ज्वलन्त समस्याओं के विरुद्ध चलाना चाहिए जिन समस्याओं से भारत एवं विश्व की आम जनता त्रस्त एवं पीड़ित है। आज आर्य समाज को एक ऐसा वैद्य बनने की आवश्यकता है जो रोग की सही पहचान कर सके और उसके उपचार के लिए जन–जागृति, जन–अभियान एवं जन आन्दोलन आदि उपाय औषधीय रूप में अपनाये।

स्वामी आर्यवेश जी ने संगोष्ठी में उपस्थित चिड़ावा, पिलानी, खेतड़ी, सूरजगढ़, झुंझुनू तथा अनेक गाँव से पधारे कर्मठ कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे इस योजना को मूर्तरूप देने के लिए चिड़ावा को सर्वप्रथम चुनें और यहाँ 51 प्रतिष्ठित लोगों की एक समिति बनाकर कार्य शुरू करें। चिड़ावा के किसी भी नागरिक पर आने वाली विपत्ति या कठिनाई को दूर करने के लिए उनका सहयोग करें और यहाँ के प्रशासन को ज्ञापन देकर कह दें कि चिड़ावा में किसी भी प्रकार की रिश्वत, भ्रष्टाचार एवं जनता के ऊपर अत्याचार के दिन लद चुके हैं क्योंकि चिड़ावा की समस्त जनता की प्रतिनिधि उक्त समिति इस दिशा में जागरूकता से कार्य करेगी। यदि कहीं भी रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, अत्याचार एवं जनता का दमन हुआ तो उसके विरुद्ध बड़े से बड़ा जनआन्दोलन करने से हम पीछे नहीं हटेंगे। स्वामी जी ने सुझाव दिया कि इस 51 सदस्यीय समिति के गठन के पश्चात् चिड़ावा शहर तथा क्षेत्र के सभी गाँव में भी इकाईयाँ गठित की जायें और उन्हें इस एजेण्डे से अवगत कराया जाये और इसका नाम आर्य समाज रखा जाये। आर्य समाज के बैनर के नीचे समस्त उन लोगों तथा संगठनों को भी जोड़ने का प्रयास किया जाये जो सप्तक्रांति के मुद्दों पर कार्य करने के लिए सहमत हों अर्थात् साम्प्रदायिकता, जातिवाद, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, धार्मिक पाखण्ड, महिला उत्पीड़न तथा मुद्दों पर कार्य करने की इच्छा हो उन सभी को साथ लेकर संगठन का दायरा विस्तृत किया जाये जिससे आम जनता इस समाज परिवर्तन में शामिल हो सके। इस प्रकार स्वामी आर्यवेश जी ने विस्तार से भावी कार्यक्रम एवं कार्यशैली पर अपने विचार प्रस्तुत किये तथा कार्यकर्ताओं की शंकाओं का समाधान भी किया। कार्यक्रम बेहद सफल रहा।

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः "ओ३म्" संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है।

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक : 6 जून, मंगलवार, 2017 से 12 जून, सोमवार 2017 तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, गांव टिटौली, जिला रोहतक (हरियाणा)

पाँच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जाएगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो-कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- वैदिक विद्वानों व विदुषियों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जाएगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जाएंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक किया जाएगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाईल अपने साथ न लेकर आएं।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टॉर्च, सफेद सूट व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लाएं।
- इच्छुक छात्राएं 100 रूपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश-पत्र अपने माता-पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई तक अवश्य जमा करवाएं। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस सात दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातःराशन आदि पर लाखों रूपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कराएं। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट युवा निर्माण अभियान अथवा महिला समता मंच के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइन्ड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिए गए दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक :

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

महिला समता मंच एवं स्वामी इन्द्रवेश फांउडेशन

कार्यालय – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

सम्पर्क नं.– 9416630916, 9354840454 ☎ 01262.286900

आर्य समाज लोहारू, जिला भिवानी हरियाणा का 65वाँ वार्षिकोत्सव 29–30 अप्रैल, 2017 को समारोह पूर्वक सम्पन्न

देश में पूर्ण शराबबन्दी लागू की जाये

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज लोहारू, जिला भिवानी, हरियाणा के तत्वावधान में 29–30 अप्रैल, 2017 (शनिवार व रविवार) तदनुसार वैशाख सुदी–चतुर्थी एवं पंचमी, सम्वत् 2075 को 65वाँ वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, पूर्व एस.डी.एम. श्री इन्दर सिंह जी आर्य, श्री दयानन्द जी गिरी संरक्षक भारत स्वाभिमान ट्रस्ट भिवानी, श्री शेर सिंह आर्य संचालक महर्षि दयानन्द पालिटेकनिक कालेज मीमड़ी बाड़ी, श्री मुकेश सांगवान मानकावास, श्री कुलदीप शास्त्री बाधड़ा आदि विद्वानों के अतिरिक्त प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क प्रधान आर्य भजनोपदेशक परिषद्, श्री आजाद सिंह छिल्लर, श्री जैनेन्द्र जी तेवतिया आदि भजनोपदेशकों ने जन सामान्य का ज्ञानवर्द्धन किया। आर्य समाज के संरक्षक श्री धर्मवीर शास्त्री ने कार्यक्रम के दौरान मंच का कुशल संचालन किया तथा श्री भंवर सिंह आर्य प्रधान, मास्टर जगदीश चन्द्र आर्य वरिष्ठ उपप्रधान, श्री रोहताश कुमार आर्य मंत्री, श्री देवदत्त आर्य प्रचारमंत्री, श्री हवा सिंह आर्य कोषाध्यक्ष एवं श्री प्रेमप्रकाश सोनी उपप्रधान, डॉ. ब्रह्मदेव आर्य लेखा निरीक्षक, श्री रणसिंह शास्त्री पुस्तकाध्यक्ष, श्री रामसिंह सैनी उपमंत्री, श्री लेखराम आर्य उपमंत्री, श्री पवन कुमार संगठन मंत्री, श्री विजय सिंह शेखावत, कैप्टन रामकुमार आर्य, श्री राम अवतार आर्य, श्री मास्टर राकेश डांगी, श्री मांगेराम आर्य, श्री राकेश आर्य नशामुक्ति केन्द्र, श्री पिताम्बर आर्य, श्री बाबूलाल आर्य जूही, श्री अजय शास्त्री मांडवा, डॉ. जुगलाल आर्य धीरणवास, श्री सुरेश कादियान, सरपंच ओमवीर सिंह फरतिया, श्री राजेन्द्र सिंह नांगल, श्री घनपत सिंह नम्बरदार, मास्टर हिम्मत सिंह आर्य, श्री धर्मपाल आर्य एडवोकेट चिड़ावा, श्री जयनारायण आर्य चिड़ावा, मास्टर हरपाल हैप्पी चिड़ावा आदि का विशेष सहयोग रहा। समस्त कार्यकर्ताओं ने उत्साह के साथ अपना सहयोग प्रदान किया तथा उत्सव को सफल बनाया। क्षेत्र के दर्जनों गांव के प्रमुख कार्यकर्ता एवं नगर के स्त्री पुरुषों ने बड़े उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लिया। दो दिन के इस उत्सव में आर्य समाज लोहारू के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने भविष्य में और अधिक सक्रियता से कार्य करने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के प्रभावशाली व्याख्यानों से श्रोतागण विशेष रूप से प्रभावित हुए। स्वामी जी ने वैदिक सिद्धान्तों की सरल एवं सटीक व्याख्या करके श्रोताओं का दिल जीतने का काम किया। मनुष्य जीवन की सार्थकता, कर्म फल सिद्धान्त तथा आर्य समाज के भावी कार्यक्रम आदि विषयों पर स्वामी जी के सारगर्भित भाषण सुनकर समस्त श्रोता उत्साह तथा जोश से ओत–प्रोत हो गये। स्वामी जी ने सप्तक्रांति के मुद्दों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए केन्द्र सरकार तथा प्रान्तीय सरकार से माँग की कि केन्द्र में तथा प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी लागू की जाये। उन्होंने शराब से होने वाली हानियों तथा शराब से बर्बाद हो रहे लाखों परिवारों की दुर्दशा का वर्णन मार्मिक शब्दों में करते हुए बताया कि किस प्रकार शराब एक फलते–फूलते परिवार को उजाड़ देती है तथा किस प्रकार शराब के नशे का आदी संभ्रान्त एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति बर्बाद हो जाता है। इस प्रकार अनेक उदाहरण एवं दृष्टान्त प्रस्तुत कर उन्होंने शराब के विरुद्ध संकल्प लेने तथा जनता को शराब से मुक्त करने के लिए जबरदस्त अभियान एवं आन्दोलन चलाने का आह्वान किया। इसी प्रकार बढ़ते हुए जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, धार्मिक पाखण्ड, महिलाओं पर अत्याचार तथा आर्थिक शोषण को भी पूरे समाज के लिए खतरनाक बताते हुए स्वामी जी ने जन–जागृति का आह्वान किया। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा तथा देश के अन्य भागों में शराबबन्दी आन्दोलन बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है। उन्होंने बिहार की तर्ज पर उत्तराखण्ड तथा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्रियों के शराबबन्दी सम्बन्धी वक्तव्यों का स्वागत किया। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि राजसत्ता पर अंकुश लगाने तथा दबाव बनाने के लिए लोकशक्ति को मजबूत करना अत्यन्त आवश्यक है और इसीलिए आर्य समाज ने शराब आदि समस्याओं से जूझने के लिए लोकशक्ति को मजबूत करने का अभियान पूरे देश में चलाया हुआ है।

इस अवसर पर श्री इन्द्र सिंह आर्य रिटायर्ड एस.डी.एम. ने अपने उद्बोधन में मनुष्य जीवन को सफल बनाने के उपाय बताये। उन्होंने वाणी के माध्यम से कैसे मनुष्य हानि या लाभ प्राप्त करता है इस पर विशेष प्रकाश डाला।

स्वामी आर्यवेश जी के आह्वान पर आर्य समाज लोहारू के संरक्षक श्री धर्मवीर शास्त्री ने घोषणा की कि भविष्य में भिवानी तथा दादरी जिलों की सभी आर्य समाजें तथा सामाजिक संगठन लोक कल्याणकारी मुद्दों एवं आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के कार्यों को स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में चलाने की घोषणा करते हैं। श्री शास्त्री जी ने कहा कि स्वामी आर्यवेश जी का तेजस्वी व्यक्तित्व, कार्यक्षमता, विद्वता एवं कर्मठता से सम्पूर्ण आर्य जगत अनुभव करता है कि आर्य समाज के संगठन को तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने के लिए स्वामी आर्यवेश जी का नेतृत्व ही एक मात्र विकल्प है। उन्होंने कहा कि स्वामी जी सभी पक्ष–विपक्ष, विरोधी–समर्थक लोगों का सम्मान करके जिस प्रकार निर्विवाद छवि को प्राप्त कर चुके हैं उसके आधार पर हम सभी को यह आशा है कि आर्य समाज निकट भविष्य में एक बहुत बड़ी शक्ति के रूप में उभरेगा तथा समाज को नई दिशा देने में सफल होगा। लोहारू क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाये हुए प्रतिष्ठित श्री राम अवतार जी ने स्वामी आर्यवेश जी के अनेक महत्त्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क तथा प्रेसवार्ता आदि की व्यवस्था कर समय का विशेष सदुपयोग किया। श्री राम अवतार आर्य स्वामी आर्यवेश जी के निष्ठावान साथियों में से हैं। स्वामी जी ने आर्य समाज के समस्त अधिकारियों विशेष रूप से संरक्षक श्री धर्मवीर शास्त्री जी का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए आश्वासन दिया कि आर्य समाज के लिए वे सदैव निष्ठा के साथ कार्य करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

अखबारों के आइने से

आर्य समाज मंदिर में संबोधित करते सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश।

समाज में फैली बुराइयों को दूर करना चाहिए: आर्यवेश

लोहारू | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश ने कहा कि मूर्ति पूजा, पाखंड का विरोध करते हुए समाज में व्याप्त बुराइयों का विरोध करना चाहिए। आर्यवेश रविवार को स्थानीय आर्य समाज मंदिर 65वें वार्षिकोत्सव समारोह में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि नशाखोरी एवं दुर्व्यसनों से सामाजिक मूल्यों का पतन हो रहा है। ऐसे में हम सब की यह जिम्मेदारी बनती है कि इस प्रकार की प्रवृत्तियों से समाज को मुक्त करें। स्वामी आर्यवेश ने शराबबंदी की आवाज उठाते हुए कहा कि सरकार को बिहार तथा मध्यप्रदेश की सरकारों से सबक लेते हुए हरियाणा में भी पूर्ण शराबबंदी लागू कर देनी चाहिए क्योंकि इस मुद्दे पर प्रदेश भर में विरोध के स्वर बड़ी तेजी से उठ रहे हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले कुछ ही दिनों आर्य समाज के बैनर तले पूरे देश में सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध एक विशेष अभियान चलाया जाएगा। समारोह में भजनोपदेशक सहदेव बेधड़क ने प्रभु भक्ति के भजनों द्वारा श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। उन्होंने अपने भजनों में संदेश दिया कि यज्ञ और योग से ही प्रभु के दर्शन संभव है। इसलिए हमें नियमित रूप यज्ञ एवं योग करना चाहिए।

जीवन में गतिशीलता ही आर्य

- आर्य समाज के 65वें दो दिवसीय वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का हवन के साथ समापन
- शिक्षाओं का प्रचार किया

हरिभूमि न्यूज >> लोहारू

रविवार को स्थानीय आर्य समाज परिसर में रविवार को आर्य समाज के 65वें दो दिवसीय वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का हवन यज्ञ के साथ संपन्न हो गया इस मौके पर प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से सर्व श्री स्वामी आर्यवेश आर्य ने उपस्थित आर्यजनों को संबोधित करते हुए कहा कि आर्य कोई जाति नहीं अपितु मनुष्य की जीवन में गतिशीलता का नाम ही आर्य है इसलिए मनुष्य को अपने जीवन में गतिशील रहकर सामाजिक कार्य करने चाहिए, ताकि समाज प्रगति के सोपान चढ़ सके। कार्यक्रम में ज्ञानेन्द्र तेवतिया ने लोक गीतों के माध्यम से समाज की वास्तविक तस्वीर लोगों के सामने प्रस्तुत की। स्वामी आर्यवेश आर्य ने कहा कि आज समाज में मानवता समाप्त हो गई है जिसके कारण नैतिक मूल्यों का पतन हो गया और लोग एक दूसरे से कट गए हैं।

भिवानी। आर्य समाज के 65वें दो दिवसीय वार्षिकोत्सव कार्यक्रम के समापन के मौके पर लोगों को संबोधित करते स्वामी आर्यवेश। फोटो: हरिभूमि

प्रदेश में शराबबंदी के लिए चलेगा आंदोलन: आर्यवेश

समाज को बचाने के लिए शराबबंदी हो: आर्यवेश

यस्यच्छायाऽमृतम्

विद्यावाचस्पतिः श्री रामदत्त शास्त्री
पक्की सराय, अनूपशहर, बुलन्दशहरम् (उ. प्र.)

वैदिकवाङ्मयं हि नाम मानव मात्रस्य कृते सुखशान्तिसमृद्धिपरिपोषकं पुष्टिवर्धनं मनोविकारापहारि सद्विचारसार समुत्पादनपरं शश्वदात्माभ्युदयकारि जीवनज्योतिरादीप्तिकरम्। वैदिकवाङ्मयतरुर्हि नितरामच्छितो विततोऽहर्निशघनच्छाया प्रदायी मधुरफलवान्, समभ्युपेतपरिश्रान्तजनमानस शंकरोऽविरतविततितापपापहारी जगज्जीवातुरूपः। साम्प्रतम् अस्मद्देशे नवयूनां नवयुवतीनां च करेषु नापतति शमं शान्तिप्रदं सून्नतविचारवर्धकं तादृशं मङ्लमयं स्वस्थं सत्साहित्यम्, सदधीत्यनवतरुणा नवतरुण्यश्च्चाविरतं कलुषितविचारधारानिमग्नाः सततं श्रृंङ्गारभावजागरूकाः कामयमाना अपि सत्पथाध्वनीना न भवन्ति, प्रत्युत कलुषितभावभरितसाहित्या धीतितत्परास्तथाविधाऽविरतचलचित्रजगदर्शन संदीप्तकामवासनाऽनलास्तथा विधेष्वेवानिशं विचारेषु ब्रुडित मानसा न कथमपि जीवनाभ्युदयाध्वानं लभन्ते।

सत्यस्य पन्था विततो देवयानः

अयि भारतीया भ्रातरः! यदि यूयं वास्तविकं तथ्यं सुखमासदयितुं कामयध्वे तर्हि त्वरया विहाय विविधान् अवद्यानध्वनः कल्मषान्, भूयो वैदिकमार्गानुररीकुरुत। स एव सारभूतः सत्यो देवयानो महान् पन्थाः इन्द्रियाणां दमनेन साधुना चेतसा चिन्तयत जन्ममरणापवर्गाय जीवनवैशद्याय वैदिकसंस्कृतिसम्पदम् अविरामोन्नतिपरां कापटिकजनजालनिर्मलगुर्वीम्। एष एव मार्गः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य प्रभोः सम्मेलनाय सांसारिक कष्टकलापापहाराय परमशान्तेरुपलब्ध्ये च।

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति

भगवती श्रुतिः स्वयं वैदिकसाहित्यस्य संस्तवं कुरुते। ऋग्यजुस्सामाथर्वरूपं देवस्य परमात्मनः काव्यं कवित्वरूपं सार्वकालिकम्, यत्कदापि न जीर्णं भवित, न च म्रियते। एतत्काव्याध्ययनाध्यापनाभ्यामेव परमां शाश्वतिकी च शांति यूयं यास्यथ। अयमेव सुखावहो दुःखापहाश्च मार्गः

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

भगवदाराधनं हि जीवनस्य परमं महत्त्वम्। यदि जगति विविधानि अनीकानि विजित्य विविधान् अरीन् संमर्द्य, धन-धान्य विविधालङ्कारसम्भारभूतिं भव्यभावनायोगान् आसाद्य प्रचुरां मेदिनीं च विजित्य तादृशमानन्दम् उपलब्धासि सर्वमिदं क्षणिकं विनाशि च सुखम्। यद्येषु तथ्यं सुखमभविष्यत् तर्हि कथं धनधान्य पूर्णजीवनाः जना आरण्यकाः संजाताः। सकलान् सांसारिकरागान् सांसारिक जनदृष्टौ सुखागारान् विहाय कथ मुनित्वमापन्नाः। कथं जनकादयो राजर्षयः स्वीयां समृद्धां राज्यसमृद्धिं परिहाय विपिनवासिनोऽभूवन्। 'नाल्पे सुखमस्ति भूम्नि सुखम्।' यो वै भूमा तत् सुखम्।' 'भूमा वै परमेश्वरः।

यजुंषि प्रतिपादितम्

स्वास्थ्य चर्चा

सेहत व सौंदर्य का रक्षक नींबू

हम सभी जानते हैं कि नींबू में कई गुण हैं। नींबू का प्रयोग औषधि के रूप में तो होता ही है, साथ ही यह सौंदर्य रक्षा में भी अपनी अहम भूमिका निभाता है। झाईयों को दूर करना हो या त्वचा की रंगत निखारनी हो, कील–मुंहासों से छुटकारा पाना हो या फिर हाथों की कोमलता बरकरार रखनी हो, नींबू इन सभी कार्यों को सम्पन्न करते हुए आपके कोमल सौंदर्य की पूरी तरह से रक्षा करता है। नींबू के अन्य गुणों के विषय में भी यहाँ जानकारी दी जा रही है।

- कृत्रिम सौंदर्य प्रसाधनों की अपेक्षा प्राकृतिक साधनों का उपयोग करना हितकारी होता है। नींबू एक ऐसा ही गुणकारी फल है जिसका उपयोग सौंदर्य प्रसाधन के रूप में करके इससे विविध लाभ लिए जा सकते हैं।
- चेहरे पर कांति लाने के लिए नींबू के रस में मलका मसूर की दाल को पीसकर मिला दें तथा इस उबटन को दस मिनट तक चेहरे पर लगा रहने दें। दस मिनट बाद इसे हल्के हाथों से रगड़कर छुड़ाएं। इस प्रक्रिया में दस दिनों में ही चेहरा जगमगाने लगेगा।
- अगर चेहरे पर झाईयाँ अपना आधिपत्य जमा रही हों तो नींबू के रसयुक्त छिलके को चेहरे पर रगड़िये। एक हफ्ते में ही आपका चेहरा झाईयों से मुक्त हो जायेगा।
- हाथों की कोमलता की रक्षा के लिए दो चम्मच नींबू के रस में एक चम्मच ग्लिसरीन और एक चम्मच गुलाब जल मिला लें और रोज रात में सोते समय आठ बूंदें लेकर हाथों की मालिश करें। हाथ हमेशा नर्म, मुलायम और कोमल बने रहेंगे।
- चेहरे की कीलों से मुक्त करने के लिए नींबू के रस को रूई की सहायता से पूरे चेहरे पर लगाएं। पांच मिनट बाद गुनगुने पानी से चेहरा धोकर रोएंदार तौलिये से पोंछ लें। एक हफ्ते के अन्दर कीलें चेहरे से गायब हो जायेंगे।
- अगर शरीर की रंगत को निखारना हो तो नहाने के पानी में दो नींबूओं का रस और एक चम्मच नमक मिला दें। इस पानी से प्रतिदिन स्नान करें। कुछ ही दिनों में शरीर की रंगत में निखार आ जाता है और दाग–धब्बे भी दूर हो जाते हैं।
- चेहरे के दाग–धब्बे को मिटाने के लिए रोज सुबह और शाम ठंडे पानी में एक नींबू का रस निचोड़कर पियें। कुछ ही दिनों में आपका चेहरा निखर जायेगा।
- मुंहासों से छुटकारा पाने के लिए कच्चे दूध में नींबू का रस निचोड़कर उसे मुंहासों पर लगायें और 15 मिनट बाद गर्म पानी से मुंह धो लें। कुछ ही दिनों में मुंहासे समाप्त हो जायेंगे और चेहरा खिल उठेगा।
- चेहरे पर चितकबरे दागों को साफ करने के लिए रात में सोते समय नींबू के रस को दागों पर लगाएं और सुबह उठकर गुनगुने पानी से मुंह धो लें। 15 दिन में ही चितकबरे दाग छूट जायेंगे।
- कुहनी का रंग अगर अधिक काला हो रहा हो तो नींबू के रस भरे छिलके पर नमक मिलाकर रगड़िये। कुहनियां दो–चार दिनों में ही साफ हो जायेंगी।
- दांत अगर अधिक पीले हो गये हों, तो नमक लगे नींबू के छिलके को दांतों पर रगड़िये। मात्र दो दिनों में ही दांत चमक उठेंगे। होंठ अगर फट रहे हों तो दूध की मलाई में नींबू के रस को निचोड़कर रोज लगाइये, होंठ मुलायम हो जायेंगे।
- रेशमी कपड़े पर पड़ा दाग छुड़ाने के लिए दो चम्मच नींबू के रस में एक चम्मच तारपीन का तेल मिलाकर घोल तैयार करें। एक नर्म मुलायम कपड़ा इस घोल में भिगोकर दाग वाले स्थान पर हल्के हाथों से रगड़िये। दाग साफ हो जायेगा।
- बिच्छू के काटे पर नींबू के रस में नमक मिलाकर मलने से लाभ होता है। इसे प्राथमिक चिकित्सा के रूप में अपनाया जा सकता है।
- मकड़ी के काटे पर नींबू के रस में नीम के पत्तों का रस–बेसन मिलाकर मलने से मकड़ी का विष नहीं चढ़ता।
- कपड़े पर अगर स्याही गिर गई हो तो उसके दाग को छुड़ाने के लिए उस पर नींबू का रस रगड़कर पानी से धो डालिए। दाग दूर हो जायेगा।
- नींबू के सूखे छिलकों को सुलगाकर उसका धुआं खटमल युक्त चारपाई या कुर्सी आदि में लगाने से खटमल भाग जाते हैं।
- नींबू के रस में बराबर मात्रा में नीम की पत्तियों के रस को मिलाकर दस बूंद दिन में तीन बार योनि में डालने से ल्यूकोरिया एवं योनि की खुजली से मुक्ति मिलती है।
- मधुमक्खी के काटने पर रसयुक्त नींबू के छिलके में नमक लगाकर रगड़ने से राहत मिलती है।
- नींबू के छिलकों को सुखाकर पीस लें। इस डस्ट को कीड़े–मकोड़ों वाले स्थान पर छिड़कें कीड़े–मकोड़े भाग जाते हैं।
- आंवलें के तेल में नींबू का रस मिलाकर बालों में लगाने से बाल लम्बे, घने व काले होते हैं, साथ ही जूं भी मर जाती हैं।

संकलन – घनश्याम मुरारी

HOW TO ESTABLISH AS A GRAHSTHI

There are four ashramas as Brahmcharya, Grahstha, Vanprastha & sanyas in the vedic system of living. Our Vedic philosophers being practical men have already thought over the partitions of our life's time. The above mentioned gradation deals with inner joy.

Life is a journey we already know. How to maintain this journey joyous and happy? This is the question which is to be answered in the light of our Ashram living.

First of all you have to become a man and man means to catch up thinking process to act what the righteousness is , to behave what the betterment is to others is so on and so forth to test your credibility in the society. Certainly, you are a human being which differs from other living ones.

You take birth in a family and you are brought up by your parents adopting certain skills to mould favourable to you at all times when your childhood begins. Their love sympathy, affection wrapped up with aesthetic sense give you turnings to prepare you physically, mentally spiritually and socially. All the impressions you catch in a normal way. You become a part and parcel of your family . In other words you are a member of society. At the age of 25 years you become a good thinker, a good contemplater. You discern the good from the evil. If you do good, you will be esteemed. you understand the etiquette, you understand your responsibilities for your parents, for the neighbours and for the nation. You may become patriot filled with utmost feelings to your country. What a philanthrophic idea you stage up. Really over the age of 21, you are physically and mentally ripened. Under 21 your decisions may mislead you. The changes of your body and brain will tell you all. So at the age of 25 you are perfectly capable for the age to get married and produce children. Female body demands the limit of 16 to 18 years of age on medical ground.

Secondly, it is proper on your part when you are employed or do some business of your own and your Conscience declares you to be a source of independently earnings to maintain your Grahstha Ashram with skillful handlings. Then you are respectable in the society and dexterious to conduct your own family. It means you have learnt lore (vidya) of how to earn and how to spend. You might have undergone the Brahmacharya Ashram first and prepared youself well because of your tactics of knowledge and experience. Only you have to learn how to overcome the sexual urge and let it flow in constructive channels of life . This can be the mental level at the age of maturity that is 25 years.

BY B.R.SHARMA VIBHAKAR

महर्षि दयानन्द धाम घटांग्रा (परभणी) महाराष्ट्र का द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 21 से 23 अप्रैल, 2017 को महर्षि दयानन्द धाम, ग्राम व पोस्ट घटांग्रा (राणीसावरगांव) जिला–परभणी (महाराष्ट्र) का द्वितीय वार्षिकोत्सव तथा स्वामी सम्यक क्रांतिवेश के पूज्य पिता श्री माणिकराव बापुराव पंवार का स्वर्ण स्मृति महोत्सव के शुभ अवसर पर चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा के पद पर स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती, संगठन मंत्री वैदिक विरक्त मण्डल, दिल्ली विराजमान रहे। वेद पाठ गुरुकुल परभणी के आचार्य जी ने किया। इस अवसर पर ईश्वर की व्यापकता, सर्वमत, पंथ सम्प्रदाय सम्मेलन, सामाजिक अन्धविश्वास, आतंकवाद, नारी उत्पीड़न आदि विषयों पर अनेक विद्वानों ने अपने–अपने विचार व्यक्त किये। तीनों दिवस रात्रिकालीन शंका–समाधान के सत्र भी आयोजित हुए। स्थानीय भजनोपदेशकों ने अपने भजनों से वैदिक धर्म की विशेषताओं और मान्यताओं का प्रचार किया। कार्यक्रम के संयोजन, प्रबन्धन और संचालन में दयानन्द धाम के अधिकारियों व कर्मचारियों का विशेष सराहनीय योगदान रहा।

– स्वामी सम्यक क्रांतिवेश,
संस्थापक/संचालक, महर्षि दयानन्द धाम, घटांग्रा, महाराष्ट्र

ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

श्री भीष्मदेव आर्य (भूतपूर्व सूबेदार भारतीय सेना) के निवास स्थान बाला जी पुरम (मथुरा) पर श्री भीष्मदेव जी ने अपने पूज्य पिता श्री चरन सिंह आर्य की स्मृति में 33वाँ शांति यज्ञ ऋग्वेद के मंत्रों से दिनांक 25 अप्रैल से 1 मई, 2017 तक आयोजित किया।

यज्ञ का संचालन श्री बृजकिशोर वानप्रस्थी, महामंत्री जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, मथुरा ने सुचारू रूप से किया। इस अवसर पर स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती (मथुरा) के सारगर्भित प्रवचन प्रतिदिन होते रहे। भजनोपदेशक श्री लाखन सिंह, स्वामी रामानन्द जी, श्री देवी सिंह आर्य व श्री धनीराम बेधड़क ने अपने सारगर्भित भजनों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर श्री विपीन बिहारी जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

– भीष्मदेव आर्य, 73, प्रिया नगरी, निकट हाईवे थाना मथुरा–281001

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री वेद प्रकाश वानप्रस्थ की धर्मपत्नी श्रीमती मुन्नी देवी का देहावसान

आर्य समाज शकरपुर के कर्मठ कार्यकर्ता श्री वेद प्रकाश वानप्रस्थ की धर्मपत्नी श्रीमती मुन्नी देवी जी का 9 मार्च, 2017 को हृदयाघात के कारण निधन हो गया। इनको पंत अस्पताल दिल्ली में इलाज के लिए ले जाया गया जहां इलाज के दौरान उनका निधन हो गया। वे 78 वर्ष की थीं। श्रीमती मुन्नी देवी अत्यन्त धर्मपारायण महिला थीं और आर्य समाज में नियमित रूप से यज्ञ करने आती थीं। अतिथियों का आदर सत्कार करने में उन्हें विशेष आनन्द आता था वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ के गई हैं। उनके एक मात्र पुत्र श्री प्रेम कुमार जी को उन्होंने बड़े यत्न से संस्कारित किया था और आज वे आर्य समाज तथा विभिन्न गतिविधियों में विशेष रुचि लेते हैं। उनकी पुत्री श्रीमती बीना भी कट्टर आर्य समाजी हैं और अपने परिवार में सुख समृद्धि के साथ जीवनयापन कर रही हैं। श्रीमती मुन्नी देवी के तीन पौत्र तथा एक पौत्री हैं जिनमें से दो का विवाह हो गया है और उनकी सन्तानों को भी वे अपना भरपूर प्यार प्रदान कर सुख पूर्वक जीवन जी रही थीं कि अचानक वे हम सबको अकेला छोड़कर चली गई। आर्य समाज शकरपुर के सभी पदाधिकारी तथा सदस्य उनके निधन से अत्यन्त दुःखी हैं तथा परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शांति तथा परिवारजनों को धैर्य बंधाने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

– पतराम त्यागी, मंत्री आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली

हापुड़ आर्य समाज का उत्सव व गुरूकुल खेड़ाखुर्द में शिक्षक शिविर सम्पन्न

रविवार, 16 अप्रैल 2017, आर्य समाज, हापुड, उ.प्र. का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। आचार्य प्रकाश आर्य (मुह्), पं. महेन्द्रपाल आर्य के प्रवचन व पं.दिनेश पथिक के मधुर भजन हुए। चित्र में–परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य का अभिनन्दन करते प्रधान श्री आनन्दप्रकाश आर्य, जिला सभा के प्रधान श्री विकास अग्रवाल, संयोजक श्री कुंवरपाल आर्य, प्रान्तीय महामंत्री श्री प्रवीन आर्या, शिक्षक सौरभ गुप्ता, गौरव आर्य। द्वितीय चित्र–दिनांक 28, 29, 30 अप्रैल 2017 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली ने "शिक्षक अभ्यास शिविर" का आयोजन प्रधान चौ.ब्रह्मप्रकाश मान की अध्यक्षता में गुरूकुल खेड़ाखुर्द, दिल्ली में किया। श्री सूर्यदेव व्यायामाचार्य के निर्देशन व श्री सौरभ गुप्ता के संयोजन में शिविर चला। परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने शिविर का उद्घाटन किया व अपनी शुभकामनाऐं प्रदान की। आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया। चित्र में–डा. अनिल आर्य, श्री संजय मितल, श्रीमती प्रवीन आर्या, धर्मपाल आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, आचार्य सुधांशु जी, गुरूकुल के मंत्री श्री मनोज मान, श्री सूर्यदेव आर्य, मेहताब मान व प्रकाश मुनि जी। आचार्य सत्यप्रिय जी, रामकुमार सिंह, वेदप्रकाश आर्य, कमल आर्य, श्री योगेन्द्र शास्त्री, दुर्गाप्रसाद शर्मा, मनोज शास्त्री, संजय आर्य, श्री कृष्ण दहिया, अरूण आर्य, माधव सिंह, अनुज आर्य, आशीष सिंह, रोहित आर्य, प्रदीप आर्य, शिवम मिश्रा, दीपक आर्य, प्रणवीर आर्य, गौरव आर्य, युवा नेता सुनील मान, देव राणा, आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना, नवापारा, उड़ीसा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर

एक निवेदन

मान्यवर!

पश्चिम ओडिशा के प्रमुख शिक्षा केन्द्र, महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष चल रहा है। पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की तपःस्थली आर्यों का तीर्थ स्थल संस्कृति एवं संस्कार की रक्षा भूमि गुरुकुल आमसेना की स्थापना मार्च माह 1968 में स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने की थी। स्थापना का वह समय इस क्षेत्र के सुदिनों के आरम्भ का समय था। विकट परिस्थितियों में स्थापित यह संस्था इस क्षेत्र की ही नहीं अपितु पूर्वोत्तर भारत की सर्वाधिक प्रशंसित एवं समाजसेवा में अग्रणी संस्था है। हजारों ब्रह्मचारियों ने यहाँ शिक्षा प्राप्त कर देश और समाज की जो बहुमूल्य सेवा की उसका आंकलन हर्ष एवं आनन्द प्रदान करता है। भारतभर में फैले आर्य जगत के समस्त समाजोपयोगी कार्यों तथा नागालैण्ड से लेकर राजस्थान, हिमाचल प्रदेश तक फैली समस्त आर्य संस्थाओं में गुरुकुल के स्नातक समाज सेवा का अनूठा कार्य कर रहे हैं। स्वामी जी का व्यक्तित्व जितना महान होता गया संस्था के कार्य भी उसी प्रकार विस्तारित होते गये।

सत्वे सिद्धिः भवति महतां नौपकरणैः।

स्वल्प साधनों के साथ आरम्भ हुई संस्था आज सर्वसाधनों से सम्पन्न, योग्य आचार्यों, कार्यकर्ताओं, समाजसेवियों, उपदेशकों की कर्मभूमि है। संस्था के कार्यों का विस्तार इस प्रकार हुआ कि 18 अन्य सहयोगी संस्थाओं की स्थापना स्वामी जी महाराज के कर–कमलों द्वारा नागालैण्ड, आसाम, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा आदि प्रदेशों में हुई है।

समाजसेवा के प्रकल्पों में 100 बिस्तरों सहित आधुनिक चिकित्सालय, औषधालय, आयुर्वेदिक फार्मेसी, कृषि फार्म्स, बागवानी, साहित्य प्रकाशन विभाग, अन्न वितरण, वस्त्र वितरण, प्रचार विभाग, कन्या महाविद्यालय, आदिवासी क्षेत्रों में कन्या छात्रावास, गौसेवा केन्द्र, शुद्धि विभाग सहित आधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन परम्परा के विद्यालयों की स्थापना प्रमुख हैं।

50 वर्षों के सिंहावलोकन के इस पुनीत अवसर पर आप संस्था के सहयोगीजनों को आमंत्रित करते हुए हमें हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। आपका आगमन इन कार्यों एवं ऋषि परम्परा के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा का द्योतक है। अभी से अपनी दैनन्दिनी में ये तिथियाँ लिख लीजिए। **23 दिसम्बर, 2017 से 25 दिसम्बर, 2017 तक आपका सादर निमंत्रण है।**

आइये! समस्त विश्व के आर्यबन्धु इस महान अवसर के साक्षी बन स्वर्ण जयन्ती उत्सव को सफल में अपना योगदान करें। आपके आगमन की प्रतीक्षा रहेगी। अपनी संस्था एवं इष्ट मित्रों सहित जरूर पधारियेगा। कुम्भ की शोभा बढ़ेगी, ऋषि परम्परा बढ़ेगी, ऋषि दयानन्द जी के स्वप्न साकार होंगे। स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की तपःस्थली आपको स्नेह सहित निमंत्रण भेज रही है।

दर्शनाभिलाषी

माता परमेश्वरी देवी	स्वामी व्रतानन्दसरस्वती	रुद्रसेन सिन्धु	सुरेश अग्रवाल	डॉ. पूर्ण सिंह डबास	आचार्य वीरेन्द्र कुमार
प्रधाना	आचार्य	उपप्रधान	उपप्रधान	वरिष्ठ संरक्षक	मंत्री

प्रकाशन की तिथि : 4 मई, 2017 वैदिक सार्वदेशिक
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

दैव्य जन और मनुष्य जन

**यत्किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि।
अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः।।**

—ऋ० ७/८६/५; अथर्व० ६/५१/३

ऋषिः—वसिष्ठः।। देवता—वरुणः।। छन्दः—पादनिचृज्जगती।।

विनय—हे वरुण! तुम जन हो तो दैव्य जन हो— पर हम गिरते—पड़ते उठने का यत्न करने वाले जन हैं। हे देव! हम मनुष्यों पर दया करो, हम तुम्हारी दया के पात्र हैं। हम बेशक तुम्हारा द्रोह करने वाले बड़े भारी अपराधी होते रहते हैं। तुम्हारे धर्मों का लोप करना सचमुच बड़ा द्रोह है। जो कुछ हमें मिल रहा है वह सब—कुछ तुम्हीं से मिल रहा है और वह सब इसीलिए मिल रहा है, क्योंकि तुम्हारे धर्म सत्य हैं, अखण्ड हैं। यदि तुम्हारे धर्म कभी खण्डित हो सकें तो तुम तुम न रहो, परन्तु इन्हीं तुम्हारे सत्यधर्मों को (जिनके कारण हमें यह सब—कुछ मिल रहा है) हम लोग अपने व्यवहार में लोप कर देते हैं। यह कितना द्रोह है? ये तुम्हारे सनातनधर्म हमारे व्यवहार में धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय आदि रूपों में प्रकट होते हैं, परन्तु हम इनका परिपालन न कर तुम सर्वदाता प्रभु के द्रोही होते रहते हैं। फिर भी हे देव ! हमारी तुमसे प्रार्थना है कि हमें सहन करो, हमें कठोर दण्ड देकर हमारा नाश मत करो। क्योंकि यह सब धर्मभंग हम जान—बूझकर नहीं करते। जो कुछ हमसे धर्म— लोप होता है वह अज्ञान से, प्रमाद से, असावधानी से होता है। अब हम कभी जान—बूझकर अधर्माचरण में नहीं प्रवृत्त होते, पर ये अज्ञान की, असावधानी की भूलें होते रहना तो हम मनुष्यों के लिए अस्वाभाविक नहीं है। इसलिए हम तुम्हारी दया के पात्र हैं। वरुण राजन्! हम जानते हैं कि राजद्रोह बड़ा भारी अपराध है। तुम्हारे सच्चे, पूर्ण कल्याणमय राज्य का द्रोह करना आत्मघात करना है। अतएव अब हम अपनी शक्ति—भर और जान—बूझकर तुम परम प्यारे का द्रोह कैसे कर सकते हैं? परन्तु तुम भी हमारे अज्ञान से किये अपराधों को क्षमा करो, किन्तु नहीं, तुमसे हम क्षमा के लिए क्यों कहें? तुम तो हमारा विनाश कर ही नहीं सकते। तुम जो भी कुछ करोगे हमारा कल्याण ही करोगे— यह निश्चित है। फिर तुमसे प्रार्थना तो इसलिए है कि इस द्वारा हम तुम्हारे कुछ और अधिक निकट हो जाएँ, हमारा हृदय शुद्ध हो जाए, क्योंकि तुम्हारे आगे रो लेने से हृदय की शुद्धि हो जाती है और भविष्य के लिए धर्म—भंग होने की सम्भावना और—और कम होती जाती है।

शब्दार्थ—**वरुण**=हे वरुण **मनुष्याः**=हम मनुष्य **दैव्ये जने**=तुझ दिव्य जन में **इदं यत् किंच अभिद्रोहम्**=यह जो कुछ द्रोह **चरामसि**=किया करते हैं। और **अचित्तीः**=अज्ञान और असावधानता से **यत् तव धर्माः युयोपिम**=जो तेरे धर्मों का लोप किया करते हैं **देव**=हे देव **तस्मात् एनसः**=उस पाप के कारण **नः मा रीरिषः**=हमारा नाश मत करो।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ —
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

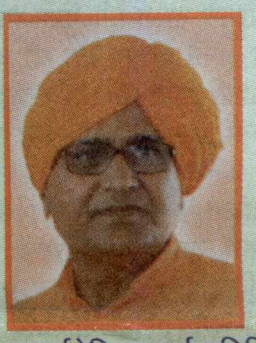

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें

www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

पृष्ठ—1 का शेष

सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के अध्यक्ष वीतराग संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस

ईर्ष्यालु नेता एवं कथित विद्वान् स्वामी इन्द्रवेश जी एवं उनके साथियों के विरुद्ध भ्रम फैलाने का कार्य करते रहे जिसके कारण वे बहुत देर तक उनसे अलग रहे, आज लगता है कि अलग रहने से आर्य समाज की महती हानि हुई है। किन्तु उन्होंने मुझे इस बात के लिए आश्वस्त किया था कि हम मिलकर पूरे आर्य समाज के संगठन को मजबूत बनायेंगे और आर्य राष्ट्र के निर्माण के लिए विधानसभाओं तथा संसद में अधिक से अधिक विधायक एवं सांसद भेजेंगे। स्वामी सुमेधानन्द जी की योजना थी कि वे दयानन्द मठ चम्बा में वैदिक अनुसंधान का एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बनाने के लिए युद्ध स्तर पर कार्य करेंगे। स्वामी जी पूरे आर्य समाज की एकता के प्रबल समर्थक थे और उन्हीं की प्रेरणा से मैंने भी सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनने के बाद संकल्प किया था कि आर्य समाज के विभिन्न घटकों में एकता करना मेरी प्राथमिकता होगी। आज स्वामी सुमेधानन्द जी हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनके कार्य, उनकी योजनाएँ तथा उनके संकल्प हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं। स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने घोषित किया कि दयानन्द मठ चम्बा को एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए वे अपनी सकारात्मक भूमिका निभायेंगे।

मठ के अध्यक्ष एवं संचालक आचार्य महावीर सिंह जी ने भाव विह्वल होकर अपने रूंधे हुए गले से जहाँ स्वामी सुमेधानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की वहीं उन्होंने स्वामी जी के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का अपना संकल्प सार्वजनिक रूप से व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यद्यपि स्वामी सुमेधानन्द जी की छत्रछाया हमारे सिर से उठ जाने से मठ के ऊपर पहाड़ के समान संकट आ पड़ा है किन्तु ईश्वर की कृपा से और पूज्य स्वामी जी महाराज की प्रेरणा से हम मठ के समस्त कार्यों को संभालने एवं आगे बढ़ाने में सफल होते जा रहे हैं। आचार्य जी ने कहा कि मैं एक साधारण कार्यकर्ता हूँ, मैं कभी भी सामाजिक गतिविधियों में मठ से बाहर सम्मिलित नहीं हुआ, आर्य समाज के कार्यक्षेत्र में मेरा परिचय कम है किन्तु पूज्य स्वामी जी के अनुयायियों, मठ के सहयोगियों, दानी महानुभावों तथा स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सवितानन्द जी, आचार्य रामानन्द जी प्रभृति संन्यासियों, विद्वानों का वरदहस्त मेरे सिर पर है इसी विश्वास को लेकर मैं मठ में कार्यों को संभाल पा रहा हूँ। आचार्य महावीर जी ने प्रस्ताव रखा कि अगले वर्ष 3 से 5 मई, 2018 तक स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के 81वें जन्मदिवस पर मठ में विशाल आर्य महासम्मेलन किया जायेगा तथा स्वामी जी की याद में स्मृति ग्रन्थ तैयार किया जायेगा और सम्पूर्ण आर्य जगत को मठ में आने के लिए आमंत्रित किया जायेगा ताकि स्वामी सुमेधानन्द जी की इच्छा के अनुरूप दयानन्द मठ चम्बा को आर्य समाज की तीर्थ स्थली के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सके। उपस्थित जनसमूह ने उक्त प्रस्ताव को उत्साह के साथ स्वीकृति प्रदान की और आचार्य रामानन्द जी के संयोजन में उक्त कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

इस पूरे आयोजन में दयानन्द मठ चम्बा के स्नातकों, आर्य समाज चम्बा के कार्यकर्ताओं तथा विद्यालय की अध्यापक तथा अध्यापिकाओं ने विशेष सहयोग प्रदान किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।